

भक्ति आंदोलन एक धार्मिक और सामाजिक सुधार आंदोलन था जो 7वीं से 12वीं शताब्दी ईस्वी के आसपास भारत में उभरा और कई शताब्दियों तक विकसित होता रहा। भक्ति, जिसका अर्थ है भक्ति, इस आंदोलन के मूल में थी, जिसने एक ही भगवान या देवता के प्रति व्यक्तिगत और प्रेमपूर्ण भक्ति पर जोर दिया। भक्ति आंदोलन का भारतीय समाज, संस्कृति और धार्मिक प्रथाओं पर गहरा प्रभाव पड़ा। भक्ति आंदोलन के बारे में मुख्य बातें इस प्रकार हैं:

1. उत्पत्ति और संदर्भ:

- भक्ति आंदोलन की शुरुआत दक्षिण भारत में हुई और शुरुआत में यह तमिल अलवर और नयनार से जुड़ा था, जिन्होंने क्रमशः भगवान विष्णु और भगवान शिव को समर्पित भक्ति भजनों की रचना की थी।
- यह रूढ़िवादी हिंदू धर्म की कठोर जाति व्यवस्था, जटिल अनुष्ठानों और संस्कृत-आधारित धार्मिक प्रथाओं की प्रतिक्रिया थी।

2. प्रमुख मान्यताएँ:

- भक्ति ने चुने हुए देवता के साथ सीधे, व्यक्तिगत और भावनात्मक संबंध पर जोर दिया, जिसे अक्सर एक प्रेमपूर्ण और सुलभ दिव्य व्यक्ति के रूप में देखा जाता है।
- भक्तों का मानना था कि जाति, लिंग या सामाजिक स्थिति के बावजूद, अटूट भक्ति के माध्यम से मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।

3. Prominent Bhakti Saints:

- भक्ति आंदोलन ने कई संतों और कवियों को जन्म दिया जिन्होंने क्षेत्रीय भाषाओं में भक्ति गीत, भजन और छंदों की रचना की। कुछ प्रसिद्ध भक्ति संतों में शामिल हैं:
 - रामानुज, विशिष्टाद्वैत दर्शन और भगवान विष्णु की भक्ति के समर्थक थे।
 - बसव, जिन्होंने लिंगायत संप्रदाय और भगवान शिव की भक्ति का समर्थन किया।
 - मीराबाई, एक राजस्थानी राजकुमारी, जो भगवान कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति के लिए जानी जाती हैं।
 - कबीर, एक रहस्यवादी कवि जिनके छंदों ने निराकार और पारलौकिक ईश्वर के प्रति भक्ति पर जोर दिया।
 - तुलसीदास, महाकाव्य "रामचरितमानस" के लेखक हैं, जो भगवान राम के जीवन का वर्णन करता है।

4. क्षेत्रीय विविधताएँ:

- भक्ति आंदोलन में पूरे भारत में क्षेत्रीय विविधताएं और संप्रदाय थे, जिनमें कर्नाटक में वीरशैववाद, उत्तर भारत में संत मत और बंगाल के भक्ति कवि शामिल थे।
- प्रत्येक क्षेत्र में संतों, परंपराओं और मान्यताओं का अपना समूह था।

5. सामाजिक सुधार:

- भक्ति संतों ने अक्सर सामाजिक मानदंडों, जातिगत भेदभाव और धार्मिक पदानुक्रम को चुनौती दी।
- उन्होंने सामाजिक समानता, पीड़ितों के उत्थान और अस्पृश्यता उन्मूलन की वकालत की।

6. भारतीय समाज पर प्रभाव:

- भक्ति आंदोलन ने जाति और लिंग की बाधाओं को तोड़कर धर्म को लोकतांत्रिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- इसने संस्कृत-आधारित शास्त्रीय परंपराओं और स्थानीय भाषाओं के बीच की खाई को पाटने में मदद की, जिससे धार्मिक शिक्षा आम लोगों के लिए अधिक सुलभ हो गई।

7. साहित्यिक और कलात्मक योगदान:

- भक्ति कविता और भक्ति गीत भारतीय साहित्यिक और कलात्मक परंपराओं का अभिन्न अंग बने हुए हैं।
- भागवत पुराण और रामचरितमानस जैसे कार्यों सहित भक्ति साहित्य प्रभावशाली बना हुआ है।

8. अन्य धर्मों पर प्रभाव:

- भक्ति आंदोलन के भक्ति, प्रेम और समावेशिता के सिद्धांतों का सिख धर्म और सूफीवाद सहित भारत में अन्य धार्मिक आंदोलनों पर प्रभाव पड़ा।

9. निरंतरता:

- भक्ति आंदोलन का प्रभाव समकालीन भारत में विभिन्न संप्रदायों और धार्मिक परंपराओं की भक्ति प्रथाओं में देखा जा सकता है।

भक्ति आंदोलन भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण शक्ति थी जिसने आध्यात्मिक विकास की खोज में भक्ति, करुणा और समानता के महत्व पर जोर देते हुए धार्मिक और सामाजिक गतिशीलता को बदल दिया। यह भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना हुआ है।